International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समाज में बदलती शैक्षिक परिभाषा और शास्त्रों में उनकी मूल अवधारणाएँ

डा.डम्बरुधर पति
सहायक आचार्य(शिक्षाविभाग)
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(शिक्षा मन्त्रालय,भारत सरकार के अधीन)
भोपाल परिसर,भोपाल

१-प्रस्तावना

शक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों , व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज वशेष के इतिहास से अ भमुख होता है। शक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व का वक सत करने वाली प्र क्रया है। यही प्र क्रया उसे समाज में एक वयस्क की भू मका निभाने के लए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शक्षा शब्द संस्कृत भाषा की ' शक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। ' शक्ष्' का अर्थ है सीखना और सखाना। ' शक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने- सखाने की क्रया।

शक्षा समाज की आधार शला है। शक्षा के द्वारा ही योग्य नागरिकों का निर्माण होता है। ऐसे नागरिक क जो समाज अथवा राष्ट्र का उत्थान और सुरक्षा कर सकते हैं। शक्षा के बिना व्यक्तित्व का वकास नहीं होता और व्यक्तित्व के वकास के बिना समाज का उत्थान सम्भव नहीं; अतः कसी समाज अथवा राष्ट्र के सर्वतोन्मुखी वकास के लए उत्तम शक्षा का होना आवश्यक है और उत्तम शक्षा तब हों सकती है जब शक्षा प्रणाली उत्तम हो।

१-१ प्राचीन भारत में शक्षा--

प्राचीन भारत में शक्षा को अत्य धक महत्त्व दिया जाता था। शक्षा को प्रकाश का स्रोत अंतर्दृष्टि ,अन्तः ज्योति, ज्ञान चक्षु और मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता था । उस युग के भारतीयों का वचार था क शक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब समस्याओं का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है। शक्षा से प्राप्त अंतर्दृष्टि व्यक्ति की बु द्ध ववेक और कुशलता में वृ द्ध करती है। शक्षा व्यक्ति को वास्त वक शक्ति से संपन्न करती है। उसके सुख ,सुयश एवं समृ द्ध में योग देती है , उसे जीवन के यथार्थ महत्त्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है और उसे भवसागर को पार करके मोक्ष प्राप्ति में सहायता देती है। शक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता है जो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हमारी शारीरिक, मान सक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरंतर एवं सामंजस्य पूर्ण वकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।

शक्षा का तात्पर्य व्यक्ति को सभ्य और उन्नत बनाना।इस दृष्टि से शक्षा आजीवन चलने वाली प्र क्रया है । सी मत अर्थ में शक्षा का अ भप्राय उस औपचारिक शक्षा से है जो व्यक्ति को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व छात्र के रूप में गुरु से प्राप्त होती थी। प्राचीन युग में शक्षा को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया है और ना जी वका उपार्जन का साधन। इसके वपरीत शक्षा को वह प्रकाश माना गया जो व्यक्ति को अपना बहूअंगी वकास करने , उत्तम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता देती थी। दूसरे शब्दों में शक्षा को जीवन के व भन्न क्षेत्रों में व्यक्ति को पथ प्रद र्शत करने वाला प्रकाश माना गया था। वैदिक युग से आज तक शक्षा के संबंध में भारतीयों की मुख्य धारणा यह है क शक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के व भन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करता है।

वद्याभ्यास स्तपो ज्ञान मन्द्रियाणां च संयमः ।
अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥

भावार्थ : वद्याभ्यास, तप, ज्ञान, इंद्रिय-संयम, अहिंसा और गुरुसेवा – ये परम् कल्याणकारक हैं ।

वद्या ददाति वनयं वनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥

भावार्थ : वद्या से वनय (नम्रता) आती है, वनय से पात्रता (सजनता) आती है पात्रता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है

अ भवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसे वनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु र्वद्या यशोबलं।।

र्थातः- बड़ों का सम्मान करने वाले और नित्य वृद्धों (बुजुर्गों) की सेवा करने वाले मनुष्य की आयु, वद्या, यश और बल ये चार चीजें बढ़ती हैं।

वद्या नाम नरस्य रूपम धकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
वद्या भोगकरी यशः सुखकरी वद्या गुरूणां गुरुः।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वद्या बन्धुजनो वदेशगमने वद्या परं दैवतम्।
वद्या राजसु पुज्यते न हि धनं वद्या वहीनः पशुः॥

अर्थातः- वद्या इन्सान का व शष्ट रुप है, वद्या गुप्त धन है. वह भोग देनेवाली, यशदेने वाली, और सुखकारी है. वद्या गुरुओं की गुरु है, वदेश में वद्या बंधु है| वद्या बड़ी देवता है, राजाओं में वद्या की पूजा होती है, धन की नहीं, वद्या वहीन व्यक्ति पशु हीं है|

व्यापक दृष्टि में शक्षा का अर्थ बालक के उन सभी अनुभवों से है जिसका प्रभाव उसके ऊपर जन्म से लेकर मृत्यु तक पड़ता है। अर्थात शक्षा वह अनियंत्रित वातावरण है जिस में रहते हुए बालक अपनी प्रकृति के अनुसार स्वतंत्रता पूर्वक नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है तथा वक सत होता है । शक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्र क्रया है । ऐसी शक्षा कसी वशेष व्यक्ति समय स्थान अथवा देश तक ही सी मत नहीं रहती अ पतु जिन व्यक्तियों के संपर्क में आकर बालक जो कुछ भी सीखता है वह सब उसके शक्षक हैं जिन्हें वह सखाता है वह सब उसके शष्य हैं तथा जिस स्थान पर सीखने अथवा सखाने का कार्य चलता है वह स्कूल है। इस प्रकार बालक का समस्त जीवन स्कूल भी है तथा शक्षा का काल भी। शक्षा बालक के प्राकृतिक वकास की प्र क्रया है मनुष्य के मस्तिष्क में अदृश्य रूप से वद्यमान संसार के सर्वमान्य वचारों को प्रकाश में लाना शक्षा का एक अर्थ है शक्षा वह प्र क्रया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियां बाहर प्रकट होती है। शक्षा मनुष्य के अंदर सन्निहित पूर्णता को प्रदर्शन करती है।

प्राचीन भारतीय शक्षा के मुख्य उद्देश्यों एवं आदर्शों का वर्णन इस प्रकार कया जा सकता है - ज्ञान को अनुभूति पर बल, चत्र वृत्तियों का निरोध, ईश्वर भक्ति व धा र्मकता का समावेश, चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का वकास, नागरिक और सामाजिक कर्तव्य पालन की भावना का समावेश, सामाजिक कुशलता की उन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण व प्रसार।

१-२ वर्तमान शक्षा प्रणाली

भारत की प्राचीन संस्कृति अत्यन्त गौरवपूर्ण थी । यहाँ अनेक ऋ ष, मुनि, वचारक, दार्शनिक पैदा हुए जिन्होने अपने उर्वरक मस्तिष्क से अनेक ग्रन्धों का प्रणयन कया । वेद, वश्व के प्राचीनतम ल खत ग्रन्ध हैं । उनसे ज्ञात होता है क उन दिनों हमारे देश में शक्षा का काफी प्रचार व प्रसार था । यह वद्या का केन्द्र था । यहाँ वदेशी लोग भी वद्या ग्रहण करने के लए आते थे ।

धीरे-धीरे समय ने पलटा खाया, शक्षा में भी अनेक परिवर्तन हुए । जो भी देश का शासक रहा, उसने शक्षा प्रणाली को भी अपने अनुरूप बनाने का प्रयास कया । शक्षा देने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की प्राचीन धारा ने आधुनिक शक्षा प्रणाली का रूप ग्रहण कया जो अनेक गुण व दोषों से भरी हुई है ।

कसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शक्षा सामाजिक नियंत्रण , व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आ र्थक प्रगति का मापदंड होती है । भारत की वर्तमान शक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई॰ में लागू कया गया ।

सन् 1835 ई॰ में जब वर्तमान शक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था क अंग्रेजी शक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लए बिचौ लयों की भू मका निभाने तथा सरकारी कार्य के लए भारत के व शष्ट लोगों को तैयार करना है ।इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 ई॰ में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आँकड़े को भी पार नहीं कर पाई । स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी ।

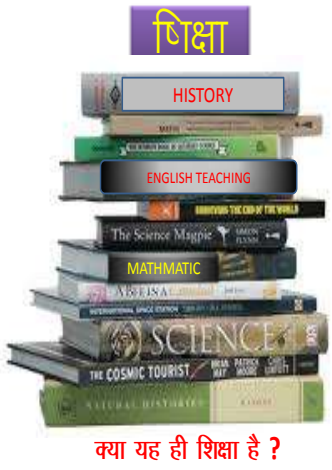

क्या यह ही शिक्षा है ?

क्या यह ही शिक्षा है ?

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

क्या यह ही शिक्षा है ?

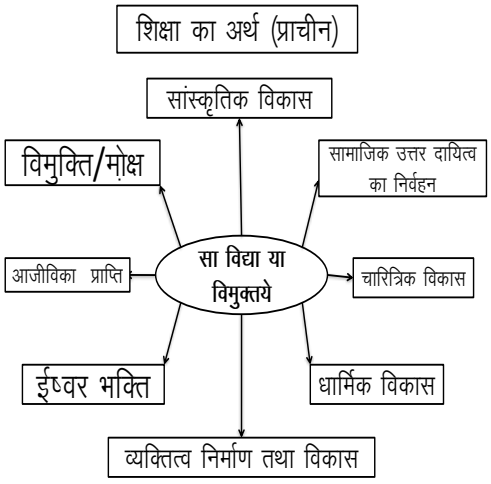

देश में प्रौढ़ शक्षा और साक्षरता के नाम पर लूट-खसोट , प्राथ मक शक्षा का दुर्बल आधार, उच्च शक्षण संस्थानों का अपनी सशक्त भू मका से अलग हटना तथा अध्यापकों का पेशेवर दृष्टिकोण वर्तमान शक्षा प्रणाली के लए एक नया संकट उत्पन्न कर रहा है ।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नए चेहरे , निजीकरण तथा उदारीकरण की वचारधारा से शक्षा को भी 'उत्पाद' की दृष्टि से देखा जाने लगा है जिसे बाजार में खरीदा-बेचा जाता है । इसके अतिरिक्त उदारीकरण के नाम पर राज्य भी अपने दायित्वों से वमुख हो रहे हैं ।

इस प्रकार सामाजिक संरचना से वर्तमान शक्षा प्रणाली के संबंधों , पाठ्यक्रमों का गहन वश्लेषण तथा इसकी मूलभूत दुर्बलताओं का गंभीर रूप से वश्लेषण की चेष्टा न होने के कारण भारत की वर्तमान शक्षा प्रणाली आज भी संकटों के चक्रव्यूह में घिरी हुई

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है । प्रत्येक दस वर्षों में पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जाती हैं ले कन शक्षा का मूलभूत स्वरूप परिवर्तित कर इसे राष्ट्रहित स्वस्थ रोजगारोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है ।

यद्य प वर्तमान समय में शै क्षक संस्थाओं में व वध वषयों का अध्ययन अध्यापन कया जा रहा है तथा प भारतीय संस्कृति का संरक्षण तथा उत्तम नागरिक का निर्माण में प्राचीन शक्षा पद्धति की तथा संस्कृत शास्त्रों की आवश्यकता है। प्राचीन , मध्यकालीन एवं आधुनिक शक्षा पद्धति के तुलनात्मक अध्ययन से यह वदित होता है क सूराष्ट्र निर्माण के संदर्भ में प्राचीन शक्षा पद्धति की आवश्यकता है।

2- संस्कृत शास्त्रों की शक्षा मेंआवश्यकता

ज्ञान वज्ञान परंपराओं की मुख्य स्रोत तथा पृष्ठपोषक संस्कृत भाषा वैसे तो कसी वशेष परिचय की अपेक्षा नहीं रखती क्यों क समस्त वश्व इसकी प्राचीनता महानता तथा शुद्धता से न केवल परि चत हैं अ पतु इसका ऋणी भी है। संस्कृत केवल एक भाषा नहीं है अ पतु वश्व के ज्ञान वज्ञान परंपरा की नि ध है। संस्कृत भाषा में ल खत ग्रंथों में उत्तम नागरिक, समाज तथा राष्ट्र संबंधी तत्वों का समावेश है। शास्त्रों में व्यक्ति का जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रत्येक क्रयाओं के संबंध में मार्गदर्शन कया गया है। वर्तमान समय में संस्कृत की आवश्यकता के संदर्भ में निम्न ल खत वंदु हो सकते हैं।

- प्राचीन भारत का वास्त वक ज्ञान
- भारतीय वज्ञान की प्रगति का ज्ञान
- भारतीय धर्म शास्त्र का ज्ञान
- भारतीय दर्शन का ज्ञान
- चरित्र निर्माण हेतु शक्षा का संप्रेषण
- राष्ट्रीय एकीकरण की भावना का वकास
- वश्व बंधुत्व की भावना का प्रसार
- गौरवपूर्ण अतीत से प्रेरणा
- मानवीय मूल्यों का ज्ञान
- संस्कार युक्त शक्षा का प्रसार
- आदर्श जी वका उपार्जन
- सुराष्ट्र निर्माण में हमारा योगदान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संस्कृत के अध्ययन से व्यक्ति के संस्कारों का परिष्कार होता है। उसमें सदाचार शालीनता इमानदारी के गुणों का वकास होता है। संपूर्ण संस्कृत साहित्य में मानवता की मानवता पर निश्चित वजय के वश्वास के साथ मानव मूल्यों जीवन के उच्च आदर्शों को अ धक महत्व दिया गया है। अतः मानव कल्याण के लए संस्कृत का अध्ययन अध्यापन महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।

वर्तमान शक्षा के उद्देश्यों के क्रम में प्रथम , आजी वका प्राप्ति तथा उद्योग प्राप्ति माना जाता है। आधुनिक शक्षा पद्धति में निजी करण , स्वार्थ स द्ध, कसी भी तरह कार्य स द्ध, भौतिकवाद में अ धक वश्वास , सस्वार्थ ईश्वर भक्ति एवं सस्वार्थ सामाजिक सेवा आदि का सम्प्रत्यय एक स्वस्थ समाज का निर्माण में बाधा पहुंचाता है। प्रत्येक क्षेत्र में शुद्धता को प्राप्त करने हेतु संस्कृत शक्षा की आवश्यकता है। आधुनिक शक्षा का प्रभाव से धर्म, परिवार, राजनीति, संस्कृति, संस्कार, शक्षक, छात्र, समाज, राष्ट्र, स्वास्थ्य एवं आजी वका आदि वषयों की परिभाषा को परिवर्तन हो गया। इस प्रत्येक वषय पर व्यक्ति का राष्ट्र के अनुकूल शुद्ध ज्ञान प्रदान हेतु यह शोध लेख संकल्पना की गई है।

३-शोध लेख के उद्देश्य--

उद्देश्य के बिना कसी भी कार्य की सद्धता संभव नहीं है। अतः इस परियोजना के उद्देश्य निम्न ल खत है।

१.संस्कृत में स्थित वास्त वक तथ्यों को जन समाज तक पहुंचाना।
२.सुराष्ट्र निर्माण में संस्कृत ज्ञान के योगदान को उपस्थापन करना।
३.दिनचर्या में संस्कृत ज्ञान की आवश्यकता को उपस्थापन करना।
४.स्वयं , समाज तथा राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्यों को बताना।
५.संस्कृति, संस्कार एवं धर्म आदि भारतीय ज्ञान परंपराओं के साथ वास्त वक परिचय कराना।
६.भारतीय शक्षा परंपरा , शक्षक, छात्र, समाज तथा राष्ट्र के बीच अंत:संबंध को स्पष्ट कराना।
७.भारतीय प्रणाली से स्वस्थ जीवन का निर्माण करने के संदर्भ में मार्गदर्शन कराना।
८.राष्ट्र निर्माण में आदर्श राजनीति के सन्दर्भ में तथ्यों का उपस्थापन कराना।**s**

४- व ध एवं उपकरण--

समाज में बदलती शै क्षक परिभाषा और शास्त्रों में उनकी मूल अवधारणाएं शोध लेख की सद्धता हेतु ऐतिहा सक व ध को अनुकरण कया गया एवं अ भलेखानुसूची के द्वारा तथ्यों का एकत्रीकरण कया गया ।

५- शोध लेख का वषयवस्तु वश्लेषण --

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संस्कृत के प्रति वर्तमान वकृत संकल्पनाओं को दूर करते हुए वास्त वक तथ्यों को प्रस्तुत करना इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य है। जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ आम वषय होते हैं , जिस वषय के साथ वह मानव जुड़ता है और आगे बढ़ता है। उस वषय के प्रति सकारात्मक जागरूकता उस मानव को आगे जाने में मदद करती है। यदि उस वषय में नकारात्मक भावना पैदा होगी तब मानव का जीवन एक द्वंदात्मक परिस्थितियों से गुजरता है। तन- धन-मन होते हुए भी जीवन अशांत हो जाता है। अतः उ चत मार्ग पर जन समाज को लाना इस परियोजना का लक्ष्य है। इस परियोजना में शक्षा , धर्म, परिवार, राजनीति, संस्कृति, संस्कार, शक्षक, छात्र, समाज, राष्ट्र, स्वास्थ्य तथा आजी वका आदि वषय पर तत्त्वों का संकलन कया गया। वेद , वेदांत, पुराण, महाभारत, रामायण आदि संस्कृत शास्त्रों में स्थित उपरोक्त वषय आधारित श्लोकों को चयन करते हुए वर्तमान में उसकी प्रासं गकता को उपस्थापन कया गया। संस्कृत शास्त्रों में स्थित जीवन दर्शन के तथ्यों का संक लत निम्नवत् कया गया।

शक्षा

अनुष्ठानेन रहिता, पाठमात्रेण केवलम्।
रंजयत्येव या लोकं, कं तया शुक वद्यया।।

दर्पदलनम्/3/31

जो आचरण में नहीं आती , जिसे केवल मात्र उच्चारण करते हैं और जो दुनिया को प्रसन्न मात्र करती है, ऐसी वद्या शुक वद्या कहलाती है। जैसे तोता बिना अर्थ समझे कुछ रटकर दूसरों का मनोरंजन ही कर लेता है , ऐसे ही व्यवहार से शून्य वद्या मनोरंजन-मात्र कर सकती है, उससे कोई वशेष लाभ नहीं होता।

क्रया- वरहितं हन्त, ज्ञानमात्रमनर्थकम्।
गतिं वना प थज्ञोऽ प, नाप्नोति, पुरमीप्सितम्।।

ज्ञानसार/9/2

अरे! जो ज्ञान व्यवहार में नहीं आता, वह तो व्यर्थ भार-स्वरूप है, जैसे रास्ते को जानने वाला भी व्यक्ति बिना चले गन्तव्य स्थान पर कदा प नहीं पहुँच सकता।

नास्ति वद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं, नास्ति त्यागसमं सुखम्।।

महाभा./शान्ति./129/6

वद्या के समान कोई आँख नहीं है , अर्थात् वद्वान् व्यक्ति दूर-दूर की बातें समझने में समर्थ हो जाता है। सत्य के समान कोई तप नहीं है , अर्थात् सत्य बोलते समय मनुष्य को अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ते हैं। राग(मोह) बन्धन का कारण होने से अनेक दुःखों को जन्म देता है, अतः मोह के समान कोई दुःख नहीं है और त्याग के समान

कोई सुख नहीं है अर्थात् धन , अ भमान आदि को छोड़ने से मनुष्य अपने आप को हल्का-फुल्का अनुभव करता है और वह कर्तव्य पालन करने के कारण सुख अनुभव करता है।

पठकाः पाठकाश्चैव, ये चान्ये शास्त्र चन्तकाः ।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः, यः क्रयावान् स पण्डितः ।।

महाभा. /वनपर्व/313/110

पढ़ने और पढ़ाने वाले , तथा जो भी कोई शास्त्रों पर वचार करने वाले हैं , यदि वे कर्मशील नहीं है, तो वे केवलमात्र पढ़ने- लखने के व्यसनी तथा मूर्ख हैं। वस्तुतः वद्वान् (पण्डित) तो वह है , जिस का जीवन कर्मशील है। अर्थात् पढ़- लखकर उस पर आचरण करना ही वद्वत्ता की निशानी है।

अतः संस्कारकरणे क्रयतामुद्यमो बुधैः।
शक्षयौष ध भर्नित्यं सर्वथा सुखवर्द्धनः।।

संस्कार व ध/भू मका/5

क्यों क संस्कार सुखवर्धक हैं, अतः बु द्धमानों को संस्कारों को वकास करने के लए प्रयत्नषील रहना चाहिए। बच्चों और मनुष्यों को शक्षा देकर तथा उपयुक्त औषधों द्वारा प्रतिदिन संस्कार करते रहना चाहिए।

शक्षक और छात्र

ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः।
वृष्णे दधतो वृष्ण्यम्।।

ऋग. /10/175/3

जो गुरु सुख की वृष्टि करने वाले छात्रों में शक्षा के बल को स्था पत करते हैं और परस्पर प्रेम से रहते हैं, सभी लोग उनकी प्रशंसा करते हैं।

तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत।
दधाति रत्नं वधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाषुषे।।

ऋग. /7/16/12

ज्ञानदान देने वाले , अहिंसापूर्ण कार्यों के लए सावधान करने वाले और शैक्ष णक कार्यों की व्यवस्था करने वाले ही गुरुओं का चयन वद्वान् लोग करते हैं। ऐसे ही गुरु ज्ञान के इच्छुक और गुरुभक्त शष्य को रमणीय ज्ञान तथा शारीरिक , आत्मिक और सामाजिक शक्ति से सम्पन्न कर देते हैं।

तदब्रूयात् तत्परं पृच्छेत् तत्परो तदिच्छेत् भवेत्।
येनाऽ वद्यामयं रूपं त्यक्त्वा वद्यामयं भवेत्।।

समा धशतक/53

वद्या की प्राप्ति के लए छात्र को वद्या वषयक बात ही करनी चाहिए , उसी से सम्बन्धित प्रश्न पूछने चाहिए , उसी की कामना करनी चाहिए , वद्या में ही लीन रहना चाहिए। ऐसा करने से ही वह अपने अ वद्यामय स्वरूप को त्याग कर वद्यामय स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो,
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।

ऋग्./10/53/6

हे प्रय शष्यो! जैसे सूर्य प्रकाश द्वारा अन्धकार को नष्ट कर देता है , ऐसे ही तुम ज्ञान के तत्त्वों का वस्तार करते हुए अपने अज्ञान को नष्ट कर दो। अपनी बु द्ध और कर्म द्वारा तुम उन ज्ञानमय परम्पराओं की रक्षा करो , जिन्हें पूर्वज स्था पत कर गए हैं। ईश्वरभक्तों के कार्यों का ताना-बाना सरल रूप से बुनते रहो। तुम स्वयं सच्चे मानव बनो और लोगों में मानवता का प्रचार कर उन्हें सन्मार्ग दिखाओ।

चोदितो गुरुणा नित्यमप्रचोदित एव वा।
कुर्यादध्ययने यत्नमाचार्यस्य हितेषु च।।

मनु./2/191

चाहे गुरु जो कहें या न कहें , छात्र को चाहिए क वह स्वयं स्वाध्याय और आचार्य के हित में ही लगा रहे।

तर णरित् सषासति वाजं पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्र पुरुहूतं नमे गरा तष्टेव सुद्रवम्।।

ऋग्./7/32/20

जो शक्षा द्वारा छात्रों को पार लगाने वाला शक्षक ज्ञान- वज्ञान की शक्षा शुभ बु द्ध द्वारा दे रहा है, ज्ञानरूपी परमैश्वर्य के स्वामी उसकी सभी स्तुति करते हैं। उसको हम छात्र श्रद्धा से इस प्रकार प्रणाम करते हैं , जैसे बढ़ई पहिए को घड़ते समय झुक जाता है ; अर्थात् पूर्णतः नम्र होकर हम गुरु को प्रणाम करते हैं।

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च।
स्तब्धता चा भमानित्वं तथात्या गत्वमेव च।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा वद्या र्थनां मताः।।

महा-उद्योग **40/5**

आलस्य, मद-मोह, चंचलता, गप्पें लगाना, उद्दण्डता, अ भमान तथा स्वार्थ त्याग का अभाव ये सात वद्या र्थयों के लये दोष हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सुखा र्थनः कुतो वद्या नास्ति वद्या र्थनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् वद्यां वद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।।

उद्योग **40/6**

सुख चाहने वाला वद्या प्राप्त नहीं कर सकता और वद्यार्थी को सुख नहीं मलता। सुख चाहने वाला वद्या को छोड़ दे या वद्यार्थी सुख को।

पुत्रादनन्तरं शष्य इति धर्म वदो वदुः।
एतेना प नि मत्तेन प्रयो द्रोणस्य पाण्डवः।।

महा- वराट **50/21**

गुरु को अपने पुत्र के बाद शष्य ही प्यारा होता है। यह बात धर्म के ज्ञाता बताते हैं। इस लये द्रोणाचार्य को भी अर्जुन प्रय हैं।

संध्यानां न स्वपेद् राजन् वद्यां न च समाचरेत्।
न भुञ्जीत च मेधावी तथायु र्वन्दते महत्।।

महा-अनु **104/118**

राजन्! बु द्धमान पुरुष को तथा छात्रों को शाम के समय सोना , पढ़ना और भोजन नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से वह दीर्घायु होता है।

माता गुरुतरा भूमेः, खात् पतोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात्, चन्ता बहुतरी तृणात्।।

महाभा. वनपर्व **313/59**

माता का स्थान भू म से भी महान् है , क्यों क भू म जड़ है , जब क माता चेतन होकर बच्चे की सब सु वधाओं का ध्यान रखती है। पता आकाश से ऊँचा है , क्यों क पता पुत्र की उन्नति में पूर्णतः सहयोग देता है , जब क आकाश स्वयं जड़ है। मन क्षणभर में कहीं से कहीं पहुँच जाता है , अतः यह वायु से भी तेज है और चन्ता सारे शरीर पर एकदम प्रभाव डालती है, जब क घास धीरे-धीरे फैलती है, अतः चन्ता घास से अ धक मानी गई है।

सदा प्रसन्नं मुख मष्टवाणी, सुशीलता च स्वजनेषु सख्यम्।
सतां प्रसंगः कुलहीनहानं, चन्हानि देहे त्रिदिवस्थितानाम्।।

(कामन्दकीयनीतिसार)

स्वर्ग में निवास करने वाले लोगों के शरीर के ये चन्ह होते हैं- (1) उनका मुख सदा खला रहता है , (2) मधुरवाणी बोलते हैं , (3) सुशील होते हैं , (4) अपने लोगों से मत्रता का व्यवहार करते हैं, (5) सज्जनों से संगति करते हैं और (6) नीच कुल वालों से पृथक् रहते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वास्थ्य-

भुक्त्वोप वषतस्तन्द्रा, शयानस्य तु पुष्टता।
आयुष्च क्रममाणस्य, मृत्युर्धावति धावतः।।

भावप्रकाश/दिनचर्या/158

भोजन करने के बाद बैठने से सुस्ती छा जाती है, सो जाने से शरीर पुष्ट होता है, टहलने से आयु बढ़ती है परन्तु दौड़ने से मृत्यु हो जाती है।

भवेद्यदि प्रातरजीर्णशंका,
तदाभयां नागरसैन्धवाभ्याम्।
वचू र्णतां शीतजलेन भुक्त्वा,
भुञ्जीत चान्नं मतमन्नकाले।।

भावप्रकाश/दिनचर्या/233

सवेरे के समय यदि अपच की शंका हो, तो हरड़, सोंठ और नमक को चूर्ण बना कर ठण्डे पानी के साथ खा लेना चाहिए और जब भोजन करने का समय हो तो थोड़ा ही भोजन करना चाहिए।

प्राग्द्रवं पुरुषोऽष्नीयान्मध्ये कठिनभोजनः।
अन्ते पुनर्द्रवाषी तु, बलारोग्यं न मुञ्चति।।

वष्णुपुराण/3/11/6

भोजन करते समय सबसे पूर्व तरल पदार्थ खाना चाहिए। मध्य में ठोस खाद्य लेना चाहिए। और अन्त में पुनः तरल खाद्य ही लेना चाहिए। इस प्रकार भोजन करने से मनुष्य की शक्ति ओर स्वाथ्य की हानि नहीं होती।

राजनीति

वश्वाः पृतना अ भभूतरं नरं
सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुशच राजसे।
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतो-
ग्रमोजिष्ठं तवस तरस्विनम्।

(ऋग् /8/97/10)

जो श्रेष्ठ कर्म करने वाला हो जो शत्रुओं को पराजित करने का सामर्थ्य रखता हो जिसमें नेता के गुण व पराक्रमी हो बलशाली और बलवर्धक हो ऐसे ही पुरुष को जनता अपना शासक चुने और उसे सब प्रकार के ऐश्वर्य से संपर्क करें।

अमन्दान् स्तोमान् प्र भरे मनीषा
सन्धाव ध क्षयतो भाव्यस्य।
यो मे सहस्रम भमीत सवानतूर्त्तो राजा श्रव इच्छामानः।। ऋग

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जो व्यक्ति स्वस्थ, ज्ञान का इच्छुक, नदी के तट पर आश्रम में निवास करने वाले वद्याओं से सम्पन्न वद्वानों से ज्ञान प्राप्त कर योग्य बन जाता है , ऐसा हि व्यक्ति राष्ट्राध्यक्ष बनने के योग्य होता है। अर्थात् प्राकृतिक वातावरण में रहने वाले वद्वानों से ज्ञान प्राप्त करने वाला हि योग्य राष्ट्राध्यक्ष बन सकता है।

निषसाद धृतव्रतो वरुण: पस्त्यास्वा।
साम्राज्याय सुक्रतु:।

(ऋग् *1*/25/10)

जनता द्वारा चुना गया शासक राज्य के नियमों के संपादन का व्रत लेकर शुभ बु द्ध और संकल्पों से संपन्न होकर साम्राज्य चलाने के लए प्रजाओं के मध्य सुशो भत हो रहा है।

द्यौस्ते पृष्ठं पृ थवी सधस्थमात्मान्तरिक्षं समुद्रो योनि:।
वख्याय चक्षसा त्वम भतिष्ठ पृतन्यत:।।

(यजु.*1*1/20)

हे राष्ट्राध्यक्ष सूर्य के प्रकाश के समान आपका ज्ञान आपका आधार है , भू म के समान आप सदा साथ रहने वाले हैं , आपकी आत्मा आकाश के समान उदार है , समुद्र के समान आप गंभीर हैं, आप वचार पूर्वक अपने प्रताप को प्र सद्ध करके सेना द्वारा शत्रुओं के नाश के लए सुदृढ़ बनिए।

तरवां वशो वृणतां राज्याय,
त्वा ममा: प्रदिश: पञ्चदेवी:।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व,
ततो न उग्रा वभजो वसूनि।।

(अथर्व. 3/4/2)

सारी प्रजा मलकर शासक का चुनाव करें। इसके पश्चात सभी मनुष्य आदि जड़ तथा चेतन जगत सभी दिशाएं (पूर्व , पश्चिम, उत्तर,द क्षण,आकाश और भू म) उसके अधीन रहे। यह शासक बहुत ऐश्वर्याशाली होकर योग्य पात्रों को वद्या ,धन तथा उत्तम पद आदि दें।

संस्कृत शास्त्रों में स्थित जीवन दर्शन के तथ्यों का संक लत कया जाएगा। प्रत्येक श्लोक की प्रासं गकता को वश्लेषण कया जाएगा।

वज्ञान

शास्त्रों में खगोल वज्ञान के अंतर्गत प्रकाश की गति , गुरुत्वाकर्षण, पृथ्वी का भौतिक परिचय, सूर्योदय सूर्यास्त तथा व भन्न ग्रहों की दूरी आदि के संबंध में सप्रमाण तथ्य वद्यमान है। यथा-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आकृष्टिशक्तिश्च यही तया खस्थं
गुरु स्वा भमुखं स्वशक्त्या।
आकृष्यते तत्पततीव भाति
समेसमन्तात् क्व पतत्वियं खे।।

सद्धांत शरोम ण,गोलाध्याय भुवनकोश

अर्थात् पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। पृथ्वी अपने आकर्षण शक्ति से भारी पदार्थों को अपनी ओर खींचती है और आकर्षण के कारण वह जमीन पर गरते हैं। पर जब आकाश में समान ताकत चारों ओर से लगे तो कोई कैसे गरे ? अर्थात् आकाश में ग्रह निरावल नंबर रहते हैं क्यों क व वध ग्रहों की गुरुत्व शक्तियां संतुलन बनाए रखती है।

भारतवर्ष के प्राचीन वाङ्मय वेद , ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, पुराण आदि में जहाजों का उल्लेख मलता है। जैसे क वाल्मी क रामायण में अयोध्या कांड में एक बड़ी नाव का उल्लेख आता है जिनमें सैकड़ों योद्धा सवार थे।

नावां शतानां पञ्चानां कैवर्तानां शतं शतम्
सन्नद्धानां तथा यूनान्तिष्ठक्त्वित्यभ्यचोदयत्।

वा. रामा./अयोध्या

अर्थ-सैकड़ों सन्नद्ध जवानों से भरी 500 नावों को सैकड़ों धीवर प्रेरित करते हैं। आधुनिक नाव का वर्णन भी मलता है।

सर्ववातसहां नावं यन्त्रयुक्तां पता कनीम्।

महाभारत

अर्थ-यन्त्र पताका युक्त नाव जो सभी प्रकार की हवाओं को सहने वाली है। शास्त्रों में नौकाओं के प्रकार एवं निर्माण प्र क्रया के संबंध में वस्तृत वर्णन है।

भारतवर्ष के प्राचीन वाङ्मय वेद , ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, पुराण आदि में जहाजों का उल्लेख मलता है। जैसे क वाल्मी क रामायण में अयोध्या कांड में एक बड़ी नाव का उल्लेख आता है जिनमें सैकड़ों योद्धा सवार थे।

नावां शतानां पञ्चानां कैवर्तानां शतं शतम्
सन्नद्धानां तथा यूनान्तिष्ठक्त्वित्यभ्यचोदयत्।

वा. रामा./अयोध्या

अर्थ-सैकड़ों सन्नद्ध जवानों से भरी 500 नावों को सैकड़ों धीवर प्रेरित करते हैं। आधुनिक नाव का वर्णन भी मलता है।

सर्ववातसहां नावं यन्त्रयुक्तां पता कनीम्।

महाभारत

अर्थ-यन्त्र पताका युक्त नाव जो सभी प्रकार की हवाओं को सहने वाली है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शास्त्रों में नौकाओं के प्रकार एवं निर्माण प्र क्रया के संबंध में वस्तृत वर्णन है।

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छि खग्रीवेन चार्द्रा भः काष्ठापांसु भः।।
दस्तालोष्टो निधातव्यः पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्ज्यायते तेजो मत्रावरुणसं ज्ञतम्।।

अगस्त संहिता

इसका तात्पर्य है एक म ी का पात्र लें , उसमें ताम्रप ीका डालें तथा श खग्रीवा डालें,(कांपरसल्फेट्) फर बीच में गीली काष्ठ पांसु लगाएं, ऊपर पारा तथा दस्त लॉष्ट डालें, फर तारों को मलाएंगे तो उसमें मत्रा वरुण शक्ति का उदय होगा।

अनेन जलभंगोस्ति प्राणो दानेषु वायुषु।
एवं शतानां कुम्भानां संयोगकार्यकृत्स्मृतः।।

अगस्त संहिता

अगस्त्य कहते हैं सौ कुम्भ की शक्ति का पानी पर प्रयोग करेंगे , तो पानी अपने रूप को बदल कर प्राण वायु (**Oxygen)** तथा उदान वायु(**Hydrogen)** में परिवर्तित हो जायेगा। उद्यान वायु को प्रतिबन्धक वस्त्र में रोका जाए तो यह वमान वद्या में काम आता है।

६- निष्कर्ष

समसामयिक परिस्थितियों में कया गया शोध समाज के लए अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान शक्षा मानव, समाज तथा राष्ट्र के बीच जो अंतः संबंध होना चाहिए वह वपरीत दिशा में जा रहा है। दैनन्दिनी जीवन के वषयों यथा- शक्षा , धर्म, परिवार, राजनीति, संस्कृति, संस्कार, शक्षक, छात्र, समाज, राष्ट्र, स्वास्थ्य तथा आजी वका आदि वषयों का वास्त वक ज्ञान होना अनिवार्य है। जीवन के उद्देश्य एवं लक्ष्य समाज के अनुकूल तथा संतु लत होना चाहिए। एक आदर्श मानवीय मूल्यों को प्राप्त करना शक्षा का चरम लक्ष्य है। यह समस्त ज्ञान वश्व के प्राचीन शास्त्र संस्कृत में निहित है। ज्ञान- वज्ञान परंपरा का पृष्ठपोषक संस्कृत को समाज के समस्त वर्गों के लोगों को जानना चाहिए । उसके प्रचार-प्रसार के क्रम में यह एक शोध लेख है।

संदर्भ ग्रंथ

१.यजुर्वेद
२.सामवेद
३. सुभाष वद्यालंकार, **2009,** महाभारत सूक्तिसुधा, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
४.वेद प्रकाश शास्त्री एवं डॉ श शकांत पांडेय, **2002,** शक्षा मंजूषा, नीता प्रकाशन,

नई दिल्ली।

५. वेद प्रकाश शास्त्री एवं राधेश्याम गुप्ता, **2009,** नैतिक मंजूषा, नीता प्रकाशन, नई दिल्ली।

६. वेद प्रकाश शास्त्री, राष्ट्र मंजूषा, नीति प्रकाशन, नई दिल्ली।

७. एन.आर. स्वरूप सक्सेना, **2010,** शक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सद्धांत, आर लाल बुक डपो,मेरठ।

८. पी डी पाठक, **2009,** भारतीय शक्षा और उसकी समस्याएं ,श्री वनोद पुस्तक मंदिर, आगरा २।

९. डॉ रामेश्वर दयाल गुप्त, **1997,** वैदिक वांड्मय में वज्ञान, मह र्ष सांदीपनि राष्ट्रीय वेद वद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन।

१०. डॉ राजेंद्र प्रसाद भ , **2010,** संस्कृत शक्षण, ज्ञानेश्वर प्रकाशन, जयपुर।

११. डॉ राम शकल पांडेय, **2008,** उदीयमान भारतीय समाज में शक्षक, अग्रवाल। पब्लिकेशन, आगरा ।

१२. पारसनाथ राय, **2008,** अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

१३. दामोदर धर्मानंद कोसांबी,प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल सप्रकाशन।